श्रीहनुमान्-चालीसा

महावीरी व्याख्या

पद्मविभूषण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी रामभद्राचार्य

संपादन: **डॉ. रामाधार शर्मा** और **नित्यानन्द मिश्र**

SAMPLE

श्रीहनुमान्-चालीसा— *महावीरी* व्याख्या

SAMPLE

SAMPLE

श्रीहनुमान्-चालीसा

महावीरी व्याख्या

(मूलपाठ, विशिष्टशब्दार्थ, सामान्यार्थ, व्याख्या,
पद्यार्धानुक्रमणी, और शब्दानुक्रमणी सहित
भक्तशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदासकी सिद्ध रचना)

व्याख्याकार
पद्मविभूषण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी रामभद्राचार्य

संपादन
डॉ. रामाधार शर्मा और **नित्यानन्द मिश्र**

निरामय प्रकाशन, मुम्बई
२०१६

SAMPLE

॥निरामय॥

प्रकाशक
Niraamaya Publishing Services Private Limited
804, Viva Hubtown, Western Express Highway
Jogeshwari (East), Mumbai 400060, India
www.npsbooks.com

तृतीय संस्करण: मुम्बई, जनवरी २०१६

© १९८३–२०१६ स्वामी रामभद्राचार्य

ISBN-13: 978-81-931144-1-4

आवरण-चित्र: भँवरलाल गिरधारीलाल शर्मा
© बी. जी. शर्मा आर्ट गैलरी, उदयपुर

आवरण-रूपरेखा: नित्यानन्द मिश्र

चाणक्यप्रो और **Charis SIL**में अक्षर-संयोजन: नित्यानन्द मिश्र

Ornaments from Vectorian Free Vector Pack by Webalys
www.vectorian.net

मुद्रक
Dhote Offset Technokrafts Private Limited
2nd Floor, Paramount Estate
Goregaon (East), Mumbai 400063, India
www.dhoteoffset.net

SAMPLE

संकेताक्षर-सूची

अ.को.	अमरकोष
अ.रा.	अध्यात्म-रामायण
अ.सं.	अगस्त्य-संहिता
क.	कवितावली
का.वा.	कात्यायनवार्त्तिक
कि.	किरातार्जुनीय
गी.	गीतावली
त.सं.	तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्टकृत)
तै.उ.	तैत्तिरीयोपनिषद्
दो.	दोहावली
धा.पा.	धातुपाठ (पाणिनिकृत)
प्रा.प्र.	प्राकृतप्रकाश (वररुचिकृत)
भ.गी.	भगवद्गीता
भा.पा.सू.	भाष्य (पतञ्जलिकृत)में पाणिनीयसूत्र
भा.पु.	भागवत-पुराण
म.भा.	महाभारत
म.स्मृ.	मनुस्मृति
मा.सु.सं.	महासुभाषितसंग्रह
मु.उ.	मुण्डकोपनिषद्
यो.सू.	योगसूत्र

SAMPLE

र.वं.	रघुवंश
रा.च.मा.	रामचरितमानस
रा.प्र.	रामाज्ञाप्रश्न
रा.र.स्तो.	रामरक्षास्तोत्र (बुधकौशिककृत)
वा.रा.	वाल्मीकीय-रामायण
वि.प.	विनयपत्रिका
वि.पु.	विष्णु-पुराण
वै.सं.	वैराग्यसंदीपनी
सं.ह.अ.	संकटमोचन-हनुमान्-अष्टक
ह.चा.	श्रीहनुमान्-चालीसा
ह.बा.	श्रीहनुमान्-बाहुक

SAMPLE

विषय-सूची

संकेताक्षर-सूची v

तृतीय संस्करणकी भूमिका १

आमुख ५

***महावीरी* व्याख्या** १३

व्याख्याकारका मङ्गलाचरण १३
मङ्गलाचरण दोहा १: श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज १४
मङ्गलाचरण दोहा २: बुद्धि-हीन तनु जानिकै १७
चौपाई १: जय हनुमान ज्ञान-गुण-सागर १९
चौपाई २: राम-दूत अतुलित-बल-धामा २१
चौपाई ३: महाबीर बिक्रम बजरंगी २३
चौपाई ४: कंचन-बरन बिराज सुबेसा २६
चौपाई ५: हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै २८
चौपाई ६: शंकर स्वयं केसरीनंदन २९
चौपाई ७: बिद्यावान गुणी अति चातुर ३१
चौपाई ८: प्रभु-चरित्र सुनिबे को रसिया ३३
चौपाई ९: सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ३५
चौपाई १०: भीम रूप धरि असुर सँहारे ३७
चौपाई ११: लाय सँजीवनि लखन जियाये ४१
चौपाई १२: रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ४२

SAMPLE

चौपाई १३: सहसबदन तुम्हरो जस गावैं ४३
चौपाई १४: सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ४४
चौपाई १५: जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ४५
चौपाई १६: तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ४७
चौपाई १७: तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ४९
चौपाई १८: जुग सहस्र जोजन पर भानू ५१
चौपाई १९: प्रभु-मुद्रिका मेलि मुख माहीं ५४
चौपाई २०: दुर्गम काज जगत के जे ते ५५
चौपाई २१: राम-दुआरे तुम रखवारे ५६
चौपाई २२: सब सुख लहहिं तुम्हारी शरना ६०
चौपाई २३: आपन तेज सम्हारो आपे ६१
चौपाई २४: भूत पिशाच निकट नहिं आवै ६३
चौपाई २५: नासै रोग हरै सब पीरा ६४
चौपाई २६: संकट तें हनुमान छुड़ावै ६५
चौपाई २७: सब-पर राम राय-सिरताजा ६६
चौपाई २८: और मनोरथ जो कोइ लावै ६७
चौपाई २९: चारों जुग परताप तुम्हारा ६८
चौपाई ३०: साधु संत के तुम रखवारे ७०
चौपाई ३१: अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता ७१
चौपाई ३२: राम-रसायन तुम्हरे पासा ७३
चौपाई ३३: तुम्हरे भजन राम को पावै ७४
चौपाई ३४: अंत-काल रघुबर-पुर जाई ७५
चौपाई ३५: और देवता चित्त न धरई ७६
चौपाई ३६: संकट कटै मिटै सब पीरा ७७
चौपाई ३७: जय जय जय हनुमान गोसाईं ७८

SAMPLE

चौपाई ३८: जो शत बार पाठ कर कोई ७९
चौपाई ३९: जो यह पढ़ै हनुमान-चलीसा ८०
चौपाई ४०: तुलसीदास सदा हरि-चेरा ८१
उपसंहार दोहा: पवनतनय संकट-हरण ८२
व्याख्याकारका उपसंहार ८२

परिशिष्ट १: पद्यार्धानुक्रमणी ८३

परिशिष्ट २: शब्दानुक्रमणी ८७

परिशिष्ट ३: हनुमान्‌जीकी आरती ९३

SAMPLE

SAMPLE

तृतीय संस्करणकी भूमिका

वैष्णवहृदयाकाशके देदीप्यमान सूर्य-स्वरूप इस ग्रन्थरत्नके वर्ष २०१३में प्रकाशित द्वितीय संस्करणका एक वर्षसे भी अल्प कालमें अप्राप्य हो जाना ही इसकी लोकप्रियताका परिचायक है। और लोकप्रियता हो भी क्यों नहीं? द्वैती हों अथवा अद्वैती, द्वैताद्वैती हों या अचिन्त्यभेदाभेदी; सबके हृदयसिंहासनासीन हैं हनुमान्‌जी महाराज। विशिष्टाद्वैतियोंकी तो ये थाती ही हैं। उन हनुमान्‌जी महाराजपर रचित असंख्य स्तोत्रोंमें शिरोमणिके रूपमें विराजमान है कलिपावनावतार, भक्तशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा विरचित *श्रीहनुमान्-चालीसा*। उसपर भी मणिकाञ्चनसंयोग प्रस्तुत करती है अनन्तश्रीसमलङ्कृत पदवाक्यप्रमाणपारावारीण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्यकी *महावीरी* व्याख्या। *श्रीहनुमान्-चालीसा*के गूढातिगूढ अर्थोंका सप्रमाण निदर्शन करती हुई मात्र एक दिनमें (१३–१४ मई, १९८३ ई.) प्रणीत इस विशद व्याख्याके विषयमें डॉ. रामचन्द्र प्रसादने *श्रीरामचरितमानस*के स्वोपज्ञ द्विभाषीय अनुवादके परिशिष्टमें लिखा है–[१]

> "श्रीहनुमानचालीसा की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या के लिए देखें महावीरी व्याख्या, जिसके लेखक हैं प्रज्ञाचक्षु आचार्य श्रीरामभद्रदासजी। श्रीहनुमानचालीसा के प्रस्तुत भाष्य का आधार श्रीरामभद्रदासजी की ही वैदुष्यमंडित टीका है। इसके लिए मैं आचार्य-प्रवर का ऋणी हूँ।"

[१] Ram Chandra Prasad (2008) [1990]. *Shri Ramacharitamanasa: The Holy Lake of the Acts of Rama* (2nd ed.). Delhi: Motilal Banarsidass, ISBN 978-81-208-0443-2, p. 849, footnote 1.

अस्तु। *महावीरी* व्याख्याका तृतीय संस्करण पाठकोंके सामने उपस्थित करते हुए हम गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। मूलत: यह संस्करण द्वितीय संस्करणका ही पुनर्मुद्रण है, केवल पूर्ववर्त्ती संस्करणकी कुछेक कमियोंके निराकरणका प्रयास इस संस्करणमें किया गया है। ***जुग सहस्त्र जोजन पर भानू*** अर्धालीपर सूर्य और पृथ्वीकी दूरीसे संबन्धित विशेष वक्तव्य इस संस्करणमें नया है—विगत कुछ वर्षोंमें इस विषयपर सामाजिक मीडियामें अत्यधिक चर्चा हो चुकी है, अत: प्रकाशित पुस्तकोंमें भी विषयकी चर्चा होना समीचीन है। पाठकोंकी सुविधाके लिए पद्यार्धानुक्रमणी और शब्दानुक्रमणी परिशिष्टके रूपमें दी गईं हैं। आशा है कि इस प्रकाशनसे पाठकगण प्रसन्न होंगे।

प्रस्तुत संस्करणके प्रकाशनमें बहुमूल्य श्रमदान दिया है श्री अपूर्व अग्रवालजी (मुम्बई), श्री पवन शर्माजी (दिल्ली), और श्री मोहन गर्गजी (हापुड़)ने। प्रकाशनसे पूर्व ही संस्करणकी सैकड़ों प्रतियोंको धार्मिक समारोहोंमें अल्प मूल्यपर उपलब्ध कराने हेतु पूर्वक्रयादेश देकर श्री अपूर्व अग्रवालजी (मुम्बई), श्री गजेन्द्र उपाध्यायजी (चेन्नई), सुश्री पूनम शर्माजी (दिल्ली), श्री प्रणव मिश्रजी (कोलकाता), और श्री संजय चतुर्वेदीजी (नागपुर)ने हमारा और प्रकाशकका उत्साह-वर्धन किया है, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं। राजस्थानी चित्रकलाके पुरोधा स्वर्गीय श्री भँवरलाल गिरधारीलाल शर्माजीके द्वारा चित्रित हनुमान्‌जीकी वीररसमयी छविके आवरण-पृष्ठपर प्रयोगकी अनुमति देकर उनके पुत्र श्री मुकेश शर्माजी और पौत्र श्री हर्ष शर्माजीने हमें कृतकृत्य किया है। *धोटे ऑफ़्सेट*के श्री विशाल मानेजी, श्री श्रीशैलम् पेरलाजी, श्री राजेन्द्र मोरेजी, और श्री तुषार धोटेजीने अत्यन्त अल्प समयमें पुस्तककी प्रतिदर्श प्रतियों और अन्त्य प्रतियोंके मुद्रणमें अनुकरणीय कार्यकुशलताका परिचय दिया है। *निरामय प्रकाशन*के निदेशक-युगल डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्रजी और श्रीमती रमा मिश्रजीके हम

अधमर्ण हैं, जिन्होंने *महावीरी* व्याख्याके अंग्रेज़ी अनुवादके प्रकाशनके चार मासके भीतर ही इस संस्करणको प्रकाशित किया है। इनके अतिरिक्त और भी अनेक लोगोंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे प्रकाशनमें योगदान दिया है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञता-ज्ञापन करते हैं।

प्रस्तुत संस्करणके संपादनमें पुस्तकको सभी प्रकारकी त्रुटियोंसे मुक्त रखना हमारा प्रयास रहा है। संभव है कि इस प्रयासमें हम पूर्णतः सफल नहीं हो पाए हों। प्रमाद या अनवधानके चलते यदि इस संस्करणमें कोई त्रुटि रह गई हो तो हम सभी पाठकोंसे, भक्त-वृन्दोंसे, व्याख्याकार स्वामी रामभद्राचार्यजीसे, और व्याख्येय स्तोत्रके देवता हनुमान्‌जी महाराजसे क्षमा-याचना करते हैं। साथ ही सुधी पाठकोंसे हम यह अनुरोध करते हैं कि कोई भी त्रुटि मिलनेपर उसे सुधार कर इस पुस्तकका स्वारस्य लें तथा हमें भी सूचित करनेकी कृपा करें, जिससे अगले संस्करणमें उस त्रुटिका निवारण हो जाए।

इति निवेदयतः

डॉ. रामाधार शर्मा
पटना
प्रमुख संपादक,
श्रीतुलसीपीठ सेवा न्यास

नित्यानन्द मिश्र
मुम्बई
प्रमुख संपादक,
निरामय प्रकाशन

मार्गशीर्ष पूर्णिमा, वि.सं. २०७२
(दिसम्बर २५, २०१५ ई.)

SAMPLE

आमुख

उद्यच्चण्डकराभभव्यभुवनाभ्यर्चाप्रदीप्तं वपु-
र्बिभ्रन्मञ्जुलमौञ्जसूत्रमनघं घर्मघ्नकान्तस्मितम्।
सीतारामपदारविन्दमधुपः प्रावृट्पयोदद्विषां
झञ्झावातनिभो भवाय भवतां भूयान्मुहुर्मारुतिः॥

साहित्य-गगनके मरीचिमाली एवं कविता-कामिनी-यामिनीके शारद निष्कलङ्क शशाङ्क, रामभक्ति-भागीरथी-सनाथित-हृदय-धरातल, सकल-कविकुल-शेखर, वैष्णव-वृन्द-वृन्दारकेश, सीतारमण-पदपद्म-पराग-परिमल-मकरन्द-मधुकर, कलिपावनावतार, प्रातःस्मरणीय, परम आदरणीय श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी महाराजकी कृतियोंमें *श्रीहनुमान्-चालीसा*को भी बहुचर्चित रूपमें स्थान प्राप्त है। **गुणगृह्या वचने विपश्चितः** (कि. २-५) की दृष्टिसे यह विषय विशेष आलोचनीय नहीं है, तथापि कुछ विचार करना अनुपयुक्त भी नहीं होगा। गोस्वामीजीके ही द्वारा श्रीकाशीमें प्रतिष्ठित श्रीसंकटमोचन-हनुमान्‌जीके मन्दिरमें भी यह *हनुमान्-चालीसा* स्तोत्ररत्न भित्तिपर लिखा हुआ लेख रूपमें आज भी दृष्टिगोचर है। मानसजीके तथा गोस्वामीजीके अन्य सर्वमान्य ग्रन्थरत्नोंकी प्रसंग-संगति भी इस ग्रन्थके प्रसंगोंसे एकवाक्यतापन्न हो जाती है। यथा—***लाय सँजीवनि लखन जियाये*** (ह.चा. ११), ***तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा*** (ह.चा. १६), ***तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना*** (ह.चा. १७) इत्यादि प्रसंग मानससे पूर्णतया मिलते हैं। श्रीहनुमान्-विभीषण-संवाद श्रीमानसजीके अतिरिक्त गोस्वामीजीके अन्य किसी ग्रन्थमें शब्दतः चर्चित नहीं है। पर

मानसके इस गोपनीयतम प्रसंगरत्नकी चर्चा *श्रीहनुमान्‌चालीसा*में ***तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना*** (ह.चा. १७) कह कर सूत्ररूपमें कर दी गई है। *श्रीरामचरितमानस*में कथित प्रसंगोंकी गोस्वामीजीके अन्य ग्रन्थोंसे संगति लगाई जाती है। इसीलिए द्वादश ग्रन्थ मानसजीके पूरक माने जाते हैं। जैसे द्रोणाचलको लेकर श्रीअवधके ऊपर आते हुए हनुमान्‌जीको भरतजीने बिना फरके बाणसे विद्धकर नीचे गिराया, यथा—**परेउ मुरछि महि लागत सायक** (रा.च.मा. ६-५९-१)। पर पर्वतकी क्या दशा हुई, इसका स्पष्टीकरण मानसमें न करके गोस्वामीजीने इसके पोषक *गीतावली* ग्रन्थमें किया है–**परयो कहि राम पवन राख्यो गिरि** (गी. ६-१०-२) अर्थात् हनुमान्‌जीने अपनेको गिरता हुआ जानकर द्रोणाचल पर्वतको पवनके हाथ सौंप दिया। एवमन्यत्रापि। जैसे गोस्वामीजीके अन्य ग्रन्थ मानसके प्रसंगोंके पूरक हैं, वैसे ही *श्रीहनुमान्‌-चालीसा* भी है। यथा राघवने हनुमान्‌जीको मुद्रिका दी—

परसा शीष सरोरुह पानी।
करमुद्रिका दीन्ह जन जानी॥

—रा.च.मा. ४-२३-१०

पर इस मुद्रिकाको हनुमान्‌जी महाराजने कैसे एवं कहाँ सम्भाला, मानसके इस निगूढ प्रसंगका स्पष्टीकरण *श्रीहनुमान्‌-चालीसा*में ही होता है। यथा—

प्रभु-मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥

—ह.चा. १९

अतः इस परीक्षणमें भी यह ग्रन्थ खरा उतरा।

भाषा एवं शैलीकी दृष्टिसे भी यह निन्द्य नहीं कहा जा सकता। सामान्य लोगोंके कल्याणार्थ गोस्वामीजीने **सुरसरि सम सब कहँ हित होई** (रा.च.मा. १-१४-९) की मान्यताके अनुसार अति सरल ग्राम्य भाषामें

रचना करके मधुरतम शिष्ट एवं सुबोध ग्रामीण शब्दोंमें इसे सजाया है। यही कारण है कि यह विद्वानोंकी भी हृदयतन्त्रीको झङ्कृत करता है एवं अति गँवार निरक्षर महिलाओंके भी हृदय-श्रद्धा-सुमनका परम पावन मकरन्द होकर ग्रामीण भारती मधुकरीको भी गुनगुनवाता रहता है। आज यह *हनुमान्-चालीसा* हिमाचलसे कन्याकुमारीतक प्रत्येक भारतवासीके मनोमन्दिरका देवता बना हुआ है, चाहे वह व्यक्ति किसी भी धर्म या संप्रदायका हो। विदेशोंके भी ७५ प्रतिशत भागोंमें ***जय हनुमान ज्ञान-गुण-सागर*** (ह.चा. १) का नारा बुलन्द हो रहा है। गोस्वामीजीके अतिरिक्त और किसी मनीषीकी लेखनीमें ऐसी उत्कृष्ट लोकप्रियताका प्रवाह नहीं दृष्टिगोचर होता। अन्य ग्रन्थों जैसी लोकप्रियता तुलसीकृत *हनुमान्-चालीसा* में विद्यमान है। प्रत्येक सनातन-धर्मी श्रीमानसजीके पाठ-प्रारम्भ तथा पाठ-विश्राममें *हनुमान्-चालीसा* का संपुट लगाता है।

यदि भाषापर विचार करें तो गोस्वामीजीके *श्रीरामललानह*छूसे सरल *हनुमान्-चालीसा* की भाषा नहीं है। गोस्वामीजीके अन्य ग्रन्थोंके समान इसमें भी स्वभावतः अलंकार आए हैं। यथा—

कंचन-बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥

—ह.चा. ४

अतः भले ही यह *हनुमान्-चालीसा तुलसीग्रन्थावली* में न मुद्रित हो, पर गोस्वामीजीकी रचना होनेमें किसी भी सहृदयको संदेह नहीं होगा। इसका श्रद्धासे पाठ करनेपर बहुत-से लोगोंको सफलमनोरथ होते देखा एवं सुना गया है। प्रायः भक्त महात्मा जन *हनुमान्-चालीसा* का उनचास(४९)-दिवसीय तथा अष्टोत्तरशत(१०८)-दिवसीय अनुष्ठान किया करते हैं। भीषण रोगसे आक्रान्त व्यक्ति भी इसका अनुष्ठान-विधिसे पाठ कर अति शीघ्र लाभ पाते हैं। परम श्रद्धेय, ब्रह्मलीन, अनन्तश्रीविभूषित स्वामी

हरिहरानन्दजी सरस्वती (श्रीकरपात्रीजी महाराज) तो यहाँ तक कहते थे कि *श्रीहनुमान्-चालीसा* आर्ष मन्त्रोंकी भाँति ही परमप्रमाण, सर्वशक्तिमान्, तथा सर्ववाञ्छाकल्पतरु है। यह अवधी भाषामें उपनिबद्ध तैंतालीस छन्दोंमें लिखा हुआ एक स्तोत्रकाव्य है, जिसे हम गोस्वामीजीकी सिद्ध रचना मानते हैं। *श्रीहनुमान्-चालीसा*की भाषा-शैली गोस्वामीजीके अन्य ग्रन्थोंसे मिलती-जुलती है। *श्रीहनुमान्-चालीसा*की सार्वभौमता एवं सर्वजन-सुलभताको देखते हुए कोई भी सहृदय सन्त इसे अनार्ष नहीं मान सकता। गोस्वामीजीकी द्वादश-ग्रन्थावलीके अन्तर्गत इस ग्रन्थका संग्रह न होना कोई विशेष महत्त्वका नहीं है क्योंकि बहुत-से ऐसे पद श्रीगोस्वामीजीके नामसे मिलते हैं जिनका संग्रह ग्रन्थावलीमें नहीं है, जबकि उनकी रचना-शैली क्वचित्-क्वचित् गोस्वामीजीके संगृहीत पदोंसे भी अधिक रुचिकर लगती है। यथा—

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ॥
किलकि किलकि उठत धाय परत भूमि लटपटाय।
धाय मातु गोद लेत दशरथ की रनियाँ॥
अंचल रज अंग झारि बिबिध भाँति सौं दुलारि।
तन मन धन वारि वारि कहत मृदु बचनियाँ॥
विद्रुम से अरुण अधर बोलत मुख मधुर मधुर।
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनियाँ॥
तुलसिदास अति अनंद देख के मुखारबिन्द।
रघुबर-छबि के समान रघुबर-छबि बनियाँ॥

अहो! इस पदमें उपस्थित की हुई राघव सरकारकी यह भुवनमोहन झाँकी किस सहृदय मनको बालरूप श्रीरामभद्रकी ओर झटिति नहीं खींच लेती! यह पद अलंकार, रस, भक्ति, तथा संगीतकी दृष्टिसे अनुपम होता हुआ भी गोस्वामीजीके किसी भी ग्रन्थमें संगृहीत नहीं हो सका, पर ४०० वर्षोंसे चली आ रही अविच्छिन्न परम्परामें अद्यावधि यह गोस्वामीजीकी गेय रचनाओंका

चूडामणि माना जाता है। ठीक यही तथ्य *श्रीहनुमान्-चालीसा*के विषयमें भी जानना चाहिए।

*श्रीहनुमान्-चालीसा*की श्रीतुलसीदासजीकी रचना होनेके पक्षमें एक और सशक्त प्रमाण उद्धृत किया जा रहा है। प्राय: गोस्वामीजीके अन्य ग्रन्थोंमें उनके द्वारा रचित एकमें दूसरे ग्रन्थके कतिपय पद्य उद्धृत देखे जाते हैं। यथा *दोहावली*का प्रथम दोहा (**राम बाम दिसि जानकी**, दो. १) *रामाज्ञाप्रश्न* (रा.प्र. ७-३-७) तथा *वैराग्य-संदीपनी* (वै.सं. १)में ज्यों-का-त्यों उद्धृत है। इसी प्रकार श्रीमानसजीके लगभग १०० दोहे और सोरठे यथानुपूर्वी *श्रीदोहावली*में संगृहीत हैं। उदाहरणके लिए दो-एक देखे जाएँ–

एक छत्र एक मुकुटमनि सब बरनन पर जोउ।
तुलसी रघुबर-नाम के बरन बिराजत दोउ॥

—रा.च.मा. १-२०

यही दोहा *दोहावली* ग्रन्थका ९वाँ है। बालकाण्डका २७वाँ दोहा (**राम-नाम नरकेसरी**) *दोहावली*का २६वाँ है। ठीक इसी पद्धतिका अनुसरण *श्रीहनुमान्-चालीसा*के प्रारम्भमें किया गया। अयोध्याकाण्डके प्रथम दोहेका *श्रीहनुमान्-चालीसा*के मङ्गलाचरणमें प्रस्तुतीकरण ही *हनुमान्-चालीसा*को नि:संदिग्ध कर देता है। अयोध्याकाण्डका प्रथम दोहा **श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज निज-मन-मुकुर सुधारि** इत्यादि ज्यों-का-त्यों *हनुमान्-चालीसा*के मङ्गलाचरणके रूपमें सनातन-धर्मावलम्बी आबालवृद्ध जन-जनके मुखमण्डलपर विराजमान है। अत:–

एतेहु पर करिहैं जे शंका।
मोहि ते अधिक ते जड़ मति-रंका॥

—रा.च.मा. १-१२-८

इत्यलमतिपल्लवितेन।

श्रीहनुमान्बाहुक की भाँति यह छोटे-छोटे मात्र ४३ छन्दोंमें उपनिबद्ध है। यह परम स्वस्त्ययन स्तोत्ररत्न समस्त ऐहलौकिक एवं पारलौकिक कामनाओंकी पूर्ति करता है। मैंने भी इसके विधिवत् प्रयोगका सद्यः फल देखा है। गोस्वामीजीकी ग्रन्थावलीमें संगृहीत न होनेके कारण आज तक पाश्चात्य-वासना-वासित-मनस्क साहित्यिक टीकाकार महानुभावों द्वारा उपेक्षया इसकी कोई टीका न लिखी जा सकी। कुछ वर्षों पूर्व श्रीइन्दुभूषण रामायणी द्वारा इसपर एक संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की गई। उसमें भी विषयका यथेष्ट व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण नहीं हो पाया। अत एव गतवर्ष चौद्वार (उड़ीसा)में समायोजित श्रीसंकटमोचन हनुमान्जीके प्रतिष्ठा-महोत्सवके शुभ-अवसरपर अपने सद्गुरुदेव अनन्तश्रीविभूषित श्री श्री १०८ श्रीरामचरणदासजी महाराज (फलाहारी बाबा सरकार, अरैल, प्रयाग) के आदेशानुसार मैंने *श्रीहनुमान्-चालीसा*पर लघु व्याख्या प्रस्तुत करनेका बाल-सुलभ प्रयास किया है। यह कितने अंशोंमें सफल हो पाया है, इसका आकलन सन्त महानुभाव ही कर सकते हैं; क्योंकि **हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा** (र.वं. १-१०)। शास्त्र-स्वाध्यायमें असमर्थता तथा मानव-स्वभावजन्य-प्रमाद-वशात् यदि कुत्रचित् त्रुटि हो गई हो तो भगवद्भक्तजन उसे क्षमा करेंगे।

*श्रीहनुमान्-चालीसा*में कुल ४३ पद हैं, जो *दोहा* तथा *चौपाई* छन्दमें निबद्ध हैं। इसके प्रारम्भमें दो दोहे तथा उपसंहारमें एक दोहा है, शेष ४० चौपाइयाँ हैं। ३२ मात्राओंकी एक पङ्क्तिको एक चौपाई मानकर प्रत्येक पङ्क्तिको पूर्ण छन्द स्वीकार करके ही उनकी ४० संख्याके आधारपर ग्रन्थका नाम *श्रीहनुमान्-चालीसा* रखा गया। ६४ मात्राओंकी दो-दो पङ्क्तियोंको एक चौपाई मानना भ्रमपूर्ण और अशास्त्रीय है। यदि दो-दो पङ्क्तियोंको मिलाकर चौपाई होगी तो *हनुमान्-चालीसा* सिद्ध न होगा क्योंकि चालीस पङ्क्तियोंमें बीस ही चौपाइयाँ होंगी। इस दृष्टिसे *हनुमान्-बीसा* कहना उचित होगा;

जबकि तुलसीदासजीने स्वयं *हनुमान्-चालीसा* कहा है, यथा—***जो यह पढ़ै हनुमान-चलीसा*** (ह.चा. ३९)। श्रीमानसजीमें भी जहाँ-जहाँ विषम संख्यापर पङ्क्ति आई है, उस प्रत्येक पङ्क्तिको प्रत्येक टीकाकारने स्वतन्त्र चौपाईके रूपमें मानकर उसकी टीका की है। उदाहरणार्थ–

(१) बालकाण्ड २-१३

अकथ अलौकिक तीरथराऊ।
देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ॥

(२) अयोध्याकाण्ड ८-७

गावहिं मंगल कोकिलबयनी।
बिधुबदनी मृगशावक-नयनी॥

(३) अरण्यकाण्ड १२-१४ (कुछ प्रतियोंमें १२-१३)

जहँ लगि रहे अपर मुनि-बृंदा।
हरषे सब बिलोकि सुखकंदा॥

(४) किष्किन्धाकाण्ड १०-५

मम लोचन-गोचर सोइ आवा।
बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा॥

(५) सुन्दरकाण्ड १-९

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी।
कह मैनाक होहु श्रमहारी॥

(६) युद्धकाण्ड ८०-११

सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके॥

(७) उत्तरकाण्ड ६४-९

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई।
तब शिशुचरित कहेसि मन लाई॥

यह दिग्दर्शन मात्र प्रस्तुत किया गया। *पद्मावत*की समीक्षामें आचार्य रामचन्द्र शुक्लने भी कहा है कि जायसीने सात-सात चौपाइयों अर्थात् सात-सात पङ्क्तियोंके बाद दोहा रचा है। चौपाईका तात्पर्य चार यतियों वाले बत्तीस (३२) मात्राओंके मात्रिक वृत्तसे है। महर्षि वाल्मीकिजीको जिस प्रकार बत्तीस अक्षरों वाला अनुष्टुप् सिद्ध है, उसी प्रकार वाल्मीकिजीके अवतार गोस्वामी तुलसीदासजीको बत्तीस मात्राओं वाली चौपाई सिद्ध है।

यह व्याख्या लगभग एक वर्ष पहले पूर्वदेशमें ही उपनिबद्ध की गई थी। मुझे लगता है कि इसी *हनुमान्-चालीसा*की व्याख्याके फलने दासको *रामभद्रदास* कहलानेका सौभाग्य दे दिया। मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस ग्रन्थके अनुशीलनसे आस्तिक सनातन-धर्मी हनुमत्परायण तथा श्रीमानसके कथावाचक महानुभाव परम संतोषका अनुभव करेंगे। मैं समस्त वैष्णव सन्तोंके ही कर-कमलोंमें इस ग्रन्थोपहारको समर्पित कर उनके पादपद्मोंमें साष्टाङ्ग प्रणत हो रहा हूँ।

श्रीवैष्णवेभ्यो नमो नमः।

इति निवेदयति राघवीयः

रामभद्रदासः

फलाहारी आश्रम, अरैल

प्रयाग (उत्तरप्रदेश)

गङ्गा दशहरा, वि. सं. २०४१

(जून ८, १९८४ ई.)

परिशोधित–मार्गशीर्ष पूर्णिमा, वि. सं. २०७२

(दिसम्बर २५, २०१५ ई.)

SAMPLE

महावीरी व्याख्या

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

तापिच्छनीलं धृतदिव्यशीलं ब्रह्माद्वयं व्यापकमव्ययञ्च।
राजाधिराजं विशदं विराजं सीताभिरामं प्रणमामि रामम्॥
सीतावियोगानलवारिवाहः श्रीरामपादाब्जमिलिन्दवर्यः।
दिव्याञ्जनाशुक्तिललामभूतः स मारुतिर्मङ्गलमातनोतु॥

गुरून्नत्वा सीतापतिचरणपाथोजयुगलं
चिरञ्चित्ते ध्यात्वा पवनतनयं भक्तसुखदम्।
गिरं स्वीयां दुष्टां विमलयितुमेवार्यचरितै-
र्महावीरीव्याख्यां विरचयति बालो गिरिधरः॥

श्रीगुरुदेव गजानन मारुति-आरति-नाशिनि गौरि गिरीशा।
जानकि-जीवन मारुतनंदन पंकज पायन नाइके शीशा।
माधव शुक्ल शुभा परिवा तिथि भार्गववार प्रभातगवीशा।
संबत बीस-शताधिक-चालिस व्याख्या करी हनुमान-चलीसा॥

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥

—रा.च.मा. ५-मङ्गलाचरण श्लोक ३

॥ श्रीराम ॥

मूल (दोहा)—

श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज निज-मन-मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर-बिमल-जस जो दायक फल चारि॥

शब्दार्थ—***मुकुर*** ▸ दर्पण।

अर्थ—श्रीगुरुदेवजीके श्रीचरणकमलकी पराग-रूप धूलिसे अपने मन-रूप दर्पणको स्वच्छ करके रघुकुलमें श्रेष्ठ श्रीरामभद्रजूके निर्मल यशका वर्णन कर रहा हूँ, जो चारों फलोंको देने वाला है।

व्याख्या—सनातन धर्मके अलंकारभूत परम पावन स्तोत्ररत्न *श्रीहनुमान्-चालीसा*की रचनाका प्रारम्भ करते हुए कलिपावनावतार, निखिल-वैष्णवकुल-शेखर, सारस्वत-सार्वभौम, परम रामभक्त, प्रातःस्मरणीय, कविकुलतिलक, पूज्य श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज प्रतिज्ञा-वाक्यमें सर्वप्रथम ***श्री***पदके प्रयोगसे श्रीजीका स्मरण कर रहे हैं, जो समस्त मङ्गलोंकी खान हैं।

बाम भाग शोभति अनुकूला।
आदिशक्ति छबिनिधि जगमूला॥

—रा.च.मा. १-१४८-२

ये ही श्री जनक महाराजके यशोवर्धन हेतु श्रीमिथिला-भूमिमें प्रकट होती हैं तथा श्रीसीता रूपसे श्रीरामभद्रजूके वाम भागमें विराजमान होकर जीवके भगवत्प्रातिकूल्यको निरस्त करती हैं। ***श्री*** शब्दका ***गुरु*** शब्दसे दो प्रकारका समास है—

(१) *मध्यमपदलोपी तृतीयातत्पुरुष समास—श्रिया अनुगृहीतो गुरुः इति श्रीगुरुः*। अर्थात् श्रीजीके द्वारा अनुगृहीत गुरुदेव। अभिप्राय यह है कि

श्रीसंप्रदायमें दीक्षित गुरुदेवकी ही चरण-धूलिसे मनकी निर्मलता संभव है। क्योंकि श्रीजीकी कृपाके बिना अविद्याकृत दोष नष्ट नहीं होते। तात्पर्य यह है कि श्रीजीको गोस्वामीजीने भगवदभिन्न होनेपर भी भक्तिरूपमें स्वीकारा है। यथा—

लसत मंजु मुनि-मंडली मध्य सीय रघुचंद।
ग्यान-सभा जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंद॥

—रा.च.मा. २-२३९

(२) *कर्मधारय समास—श्रीरेव गुरुः इति श्रीगुरुः*। अर्थात् श्री ही गुरु हैं। श्रीसंप्रदायमें श्रीरामानुजाचार्यजी तथा श्रीरामानन्दाचार्यजीने श्रीजीको ही परम गुरु माना है। पूर्वाचार्योंने श्रीसीता भगवतीको श्रीहनुमान्‌जीकी आचार्याके रूपमें स्वीकारा है। यथा—**समस्तनिगमाचार्यं सीताशिष्यं गुरोर्गुरुम्**, अर्थात् श्रीहनुमान्‌जी श्रीसीताजीके शिष्य तथा देवगुरु बृहस्पतिजीके भी गुरु हैं। अतः श्रीहनुमान्‌जीकी संतुष्टिके लिए प्रणीत *श्रीहनुमान्-चालीसा*के प्रारम्भमें उनकी आचार्या श्रीसीताजीका स्मरण अत्यन्त उपयोगी है, यही ***श्रीगुरु*** शब्दका अभिप्राय प्रतीत होता है।

रज शब्द यहाँ श्लेषके बलसे कमल-पक्षमें पराग एवं चरण-पक्षमें धूलि रूप अर्थका द्योतक है। मनको ***मुकुर*** कहनेका अभिप्राय यह है कि जैसे दर्पणमें बिम्बका प्रतिबिम्बन होता है, उसी प्रकार मनमें श्रीभुवनमनोहर श्रीराघवके रूपका प्रतिबिम्बन होता है। पर वह मन विषय रूप काई (जलका मल)से मलिन हो चुका है, यथा—**काई बिषय मुकुर मन लागी** (रा.च.मा. १-११५-१)। अतः उसे श्रीगुरुदेवके चरण-कमलकी पराग जैसी मृदु धूलिसे स्वच्छ करके पुनः श्रीरामजीके यशोवर्णनकी प्रतिज्ञा करते हैं, जिससे स्वच्छ मनोदर्पणमें भली-भाँति उस यशश्चन्द्रका प्रतिबिम्बन हो सके।

*श्रीहनुमान्-चालीसा*के प्रारम्भमें ***रघुबर-बिमल-जस बरनउँ*** यह वाक्यखण्ड एक जिज्ञासाका केन्द्र बन जाता है, तथा कुछ सामान्य मस्तिष्क

वालोंको असंगत प्रतीत होता है। पर विचार करने पर इसका सुगमतया समाधान हो जाता है। श्रीहनुमान्‌जी महाराज श्रीरामभद्रजूके सर्वतोभावेन समर्पित भक्तोंमें अग्रणी हैं। श्रीरघुनाथजीके अतिरिक्त वे अपना किञ्चित् भी अस्तित्व मानने को तैयार नहीं हैं। यथा—

ता पर मैं रघुबीर दोहाई।
जानउँ नहिं कछु भजन उपाई॥

—रा.च.मा. ४-३-३

अत: श्रीरघुवर-यशोवर्णनमें ही उनके यशका वर्णन गतार्थ हो जाता है। दूसरी बात यह भी है कि वैष्णव भक्तोंको अपनी प्रशंसा नहीं भाती। अत: रघुवर-यशोवर्णनसे ही श्रीहनुमान्‌जीकी प्रसन्नता संभव है। इसी उद्देश्यको ध्यानमें रखकर श्रीगोस्वामीजीने अभिधावृत्तिसे श्रीरामजीके यशका वर्णन कर *श्रीहनुमान्-चालीसा*से श्रीमारुतिको प्रसन्न किया तथा रघुवर-यशोभङ्गिमासे लक्षणावृत्ति द्वारा श्रीहनुमत्-यशोगान कर इस *हनुमान्-चालीसा* स्तोत्रको श्रीराघवकी प्रसन्नताका केन्द्र बना दिया। अत: ***रघुबर-बिमल-जस बरनउँ*** से उपक्रम करके ***राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर-भूप*** से उपसंहार करेंगे। यह रामयश अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—इन चारों फलोंका प्रदाता है। भाव यह है कि इससे प्रसन्न होकर हनुमान्‌जी महाराज *श्रीहनुमान्-चालीसा*के पाठकको पुरुषार्थ-चतुष्टय दे डालते हैं। यद्वा सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य, सारूप्य—इन चारों मुक्तिफलोंको देते हैं। अथवा धर्म, ज्ञान, योग, जप—इन चारों फलोंको देते हैं। किंवा ज्ञानवादियोंको साधन-चतुष्टयसे संपन्न कर देते हैं।

॥ श्रीराम ॥

मूल (दोहा)—

बुद्धि-हीन तनु जानिकै सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेश बिकार॥

शब्दार्थ—***बिकार*** ▸ दोष।

अर्थ—अपने शरीरको बुद्धिसे हीन जानकर मैं श्रीपवनपुत्र हनुमान्‌जीका स्मरण कर रहा हूँ। हे प्रभो! आप मुझे बल, बुद्धि, तथा विद्या प्रदान करें तथा क्लेश एवं विकारोंको समाप्त कर दें।

व्याख्या—यहाँ ***बुद्धि*** शब्द भगवत्सेवोपयोगिनी बुद्धिका वाचक है तथा ***तनु*** सूक्ष्म शरीर का, क्योंकि बुद्धिको सूक्ष्म शरीरका अवयव माना गया है। अर्थात् मेरी बुद्धि तमोगुणके आधिक्यसे भगवान्‌के श्रीचरण-कमलोंसे विमुख हो गई है, अतः पवनपुत्रका स्मरण करता हूँ। ***पवन*** शब्दका अर्थ है पवित्र करने वाला। यथा—*पुनाति इति पवनः*। आप उनके पुत्र अर्थात् अग्नि हैं, यथा—**वायोरग्निः** (तै.उ. २-१-१)। इसलिए अग्निवत् बुद्धिमें परम प्रकाशका आधान करके क्लेश आदि मलोंको ध्वस्त कर दें।

अब गोस्वामीजी हनुमान्‌जीसे तीन वस्तुओंकी याचना करते हैं—

(१) ***बल*** शब्द यहाँ काम-राग-विवर्जित-आत्मबल-परक है। यथा—**बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्** (भ.गी. ७-११)। यही आत्मबल भगवत्प्राप्तिमें साधन है, यथा—**नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः** (मु.उ. ३-२-४)।

(२) ***बुधि*** (संस्कृतः *बुद्धि*) शब्दसे यहाँ ईश्वरप्रपन्न बुद्धि अभिप्रेत है, यथा—**चरन-सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि** (रा.च.मा. ३-४)।

(३) ***बिद्या*** (संस्कृत:*विद्या*)—यहाँ विद्या विनयसंपन्ना अपेक्षित है, जो भगवत्संबन्धका विवेक उत्पन्न करके जीवको राघवके चरण-कमलसे जोड़ दे। यथा—**सा विद्या या विमुक्तये** (वि.पु. १-१९-४१)। अपि च—

बिद्या बिनु बिबेक उपजाए।
श्रम फल पढ़े किए अरु पाए॥

—रा.च.मा. ३-२१-९

अर्थात् श्रीआञ्जनेय बल, बुद्धि, एवं अध्यात्म-विद्यासे भगवान्के सौन्दर्य, ऐश्वर्य, एवं माधुर्यकी अनुभूतिका सामर्थ्य दें।

क्लेश पाँच होते हैं—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, और अभिनिवेश (मरण)। यथा—**अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः** (यो.सू. २-३)। विकार छः कहे जाते हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, एवं मात्सर्य। यथा—**षट-बिकार-जित अनघ अकामा** (रा.च.मा. ३-४७-७)। इस प्रकार पञ्च क्लेशों और षट् विकारोंका योग ग्यारह (११) हुआ और आप एकादशरुद्रमय हैं। यथा—**रुद्र-अवतार संसार-पाता** (वि.प. २५-३)। अतः मेरे इन एकादश शत्रुओंको समाप्त करें।

SAMPLE

SAMPLE

॥ श्रीराम ॥

मूल (दोहा)—

पवनतनय संकट-हरण मंगल-मूरति-रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर-भूप॥

शब्दार्थ—***पवनतनय*** ▸ पवनके पुत्र। ***सुर-भूप*** ▸ देवताओंके राजा।

अर्थ—हे पवनके पुत्र! समस्त संकटोंको हरनेवाले मङ्गलमूर्ति-रूप!! समस्त देवताओंके अधिष्ठान-स्वरूप श्रीहनुमान्‌जी महाराज!!! आप श्रीराम, श्रीलक्ष्मण, एवं माँ मैथिलीके साथ हमारे हृदयमें निवास करें।

व्याख्या—चार विशेषण देकर श्रीहनुमान्‌जीको ही मन, बुद्धि, अहंकार, एवं चित्तको शुद्ध करनेमें सहायक सिद्ध करते हैं और पश्चात् राम, लक्ष्मण, एवं सीताजीके सहित हृदयमें विश्राम करनेकी प्रार्थना करके सर्वतोभावेन श्रीमन्मारुतिके ही श्रीचरणकमलकी शरणागतिको ही परम पुरुषार्थ बताकर ग्रन्थको विश्राम दे रहे हैं।

॥ उपसंहारः ॥

सुमिरि राम-सिय-चरन-कमल गुरु-पद-रज शिर धरि।
चऊद्धार उत्कल-थल मारुतसुतहि ध्यान करि॥
संबत नभ-फल-ख-दृग सुमाधव शिव शनिवारा।
शुक्ल दूज हनुमान-चलीसा मति अनुसारा॥
जुगुति-शास्त्र-सिद्धान्तमय वैष्णव-रीति-भगति-भरी।
नाम महावीरी ललित लघु व्याख्या गिरिधर करी॥

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

पद्यार्धानुक्रमणी

इस अनुक्रमणीमें *श्रीहनुमान्-चालीसा*के सभी ८६ पद्यार्ध (तीन दोहोंके छः दल और चालीस चौपाइयोंकी अस्सी अर्धालियाँ) अकारादिक्रमसे सूचित हैं। प्रत्येक पद्यार्धके बाद कोष्ठकमें पद्य-संख्या और पूर्वार्ध/उत्तरार्ध दिए गए हैं। पद्य-संख्याके लिए *मङ्गलाचरण-दोहाको* **म.दो.**, *चौपाईको* **चौ.**, और *उपसंहार-दोहाको* **उ.दो.**— इस प्रकारसे संकेतित किया गया है। तत्तत् पद्यार्धकी प्रस्तुत संस्करणमें *महावीरी* व्याख्याकी पृष्ठ-संख्या दाहिनी ओर दिखाई गई है।

अंजनिपुत्र-पवनसुत-नामा (चौ. २, उत्तरार्ध) २१
अंत-काल रघुबर-पुर जाई (चौ. ३४, पूर्वार्ध) ७५
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता (चौ. ३१, पूर्वार्ध) ७१
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं (चौ. १३, उत्तरार्ध) ४३
अस बर दीन्ह जानकी माता (चौ. ३१, उत्तरार्ध) ७१
असुर-निकंदन राम-दुलारे (चौ. ३०, उत्तरार्ध) ७०
आपन तेज सम्हारो आपे (चौ. २३, पूर्वार्ध) ६१
और देवता चित्त न धरई (चौ. ३५, पूर्वार्ध) ७६
और मनोरथ जो कोइ लावै (चौ. २८, पूर्वार्ध) ६७
कंचन-बरन बिराज सुबेसा (चौ. ४, पूर्वार्ध) २६
कबि कोबिद कहि सकैं कहाँ ते (चौ. १५, उत्तरार्ध) ४५
काँधे मूँज-जनेऊ छाजै (चौ. ५, उत्तरार्ध) २८
कानन कुंडल कुंचित केसा (चौ. ४, उत्तरार्ध) २६
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा (चौ. ४०, उत्तरार्ध) ८१
कुमति-निवार सुमति के संगी (चौ. ३, उत्तरार्ध) २३
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं (चौ. ३७, उत्तरार्ध) ७८
चारों जुग परताप तुम्हारा (चौ. २९, पूर्वार्ध) ६८

SAMPLE

छूटहिं बंदि महा सुख होई (चौ. ३८, उत्तरार्ध) ७९
जनम जनम के दुख बिसरावै (चौ. ३३, उत्तरार्ध) ७४
जपत निरंतर हनुमत बीरा (चौ. २५, उत्तरार्ध) ६४
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते (चौ. १५, पूर्वार्ध) ४५
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर (चौ. १, उत्तरार्ध) १९
जय जय जय हनुमान गोसाईं (चौ. ३७, पूर्वार्ध) ७८
जय हनुमान ज्ञान-गुण-सागर (चौ. १, पूर्वार्ध) १९
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं (चौ. १९, उत्तरार्ध) ५४
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई (चौ. ३४, उत्तरार्ध) ७५
जुग सहस्र जोजन पर भानू (चौ. १८, पूर्वार्ध) ५१
जो यह पढ़ै हनुमान-चलीसा (चौ. ३९, पूर्वार्ध) ८०
जो शत बार पाठ कर कोई (चौ. ३८, पूर्वार्ध) ७९
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा (चौ. ३६, उत्तरार्ध) ७७
तासु अमित जीवन फल पावै (चौ. २८, उत्तरार्ध) ६७
तिन के काज सकल तुम साजा (चौ. २७, उत्तरार्ध) ६६
तीनौं लोक हाँक ते काँपे (चौ. २३, उत्तरार्ध) ६१
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा (चौ. १६, पूर्वार्ध) ४७
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई (चौ. १२, उत्तरार्ध) ४२
तुम रक्षक काहू को डर ना (चौ. २२, उत्तरार्ध) ६०
तुम्हरे भजन राम को पावै (चौ. ३३, पूर्वार्ध) ७४
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना (चौ. १७, पूर्वार्ध) ४९
तुलसीदास सदा हरि-चेरा (चौ. ४०, पूर्वार्ध) ८१
तेज प्रताप महा जग-बंदन (चौ. ६, उत्तरार्ध) २९
दुर्गम काज जगत के जे ते (चौ. २०, पूर्वार्ध) ५५
नारद सारद सहित अहीशा (चौ. १४, उत्तरार्ध) ४४
नासै रोग हरै सब पीरा (चौ. २५, पूर्वार्ध) ६४
पवनतनय संकट-हरण मंगल-मूरति-रूप (उ.दो., पूर्वार्ध) ८२
प्रभु-चरित्र सुनिबे को रसिया (चौ. ८, पूर्वार्ध) ३३
प्रभु-मुद्रिका मेलि मुख माहीं (चौ. १९, पूर्वार्ध) ५४

बरनउँ रघुबर-बिमल-जस जो दायक फल चारि (म.दो. १, उत्तरार्ध) १४
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेश बिकार (म.दो. २, उत्तरार्ध) १७
बिकट रूप धरि लंक जरावा (चौ. ९, उत्तरार्ध) ३५
बिद्यावान गुणी अति चातुर (चौ. ७, पूर्वार्ध) ३१
बुद्धि-हीन तनु जानिकै सुमिरौं पवनकुमार (म.दो. २, पूर्वार्ध) १७
भीम रूप धरि असुर सँहारे (चौ. १०, पूर्वार्ध) ३७
भूत पिशाच निकट नहिं आवै (चौ. २४, पूर्वार्ध) ६३
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै (चौ. २६, उत्तरार्ध) ६५
महाबीर जब नाम सुनावै (चौ. २४, उत्तरार्ध) ६३
महाबीर बिक्रम बजरंगी (चौ. ३, पूर्वार्ध) २३
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई (चौ. १२, पूर्वार्ध) ४२
राम-काज करिबे को आतुर (चौ. ७, उत्तरार्ध) ३१
रामचंद्र के काज सँवारे (चौ. १०, उत्तरार्ध) ३७
राम-दुआरे तुम रखवारे (चौ. २१, पूर्वार्ध) ५६
राम-दूत अतुलित-बल-धामा (चौ. २, पूर्वार्ध) २१
राम मिलाय राज-पद दीन्हा (चौ. १६, उत्तरार्ध) ४७
राम-रसायन तुम्हरे पासा (चौ. ३२, पूर्वार्ध) ७३
राम-लखन-सीता-मन-बसिया (चौ. ८, उत्तरार्ध) ३३
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर-भूप (उ.दो., उत्तरार्ध) ८२
लंकेश्वर भए सब जग जाना (चौ. १७, उत्तरार्ध) ४९
लाय सँजीवनि लखन जियाये (चौ. ११, पूर्वार्ध) ४१
लील्यो ताहि मधुर फल जानू (चौ. १८, उत्तरार्ध) ५१
शंकर स्वयं केसरीनंदन (चौ. ६, पूर्वार्ध) २९
श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज निज-मन-मुकुर सुधारि (म.दो. १, पूर्वार्ध) १४
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये (चौ. ११, उत्तरार्ध) ४१
संकट कटै मिटै सब पीरा (चौ. ३६, पूर्वार्ध) ७७
संकट तें हनुमान छुड़ावै (चौ. २६, पूर्वार्ध) ६५
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा (चौ. १४, पूर्वार्ध) ४४
सब-पर राम राय-सिरताजा (चौ. २७, पूर्वार्ध) ६६

SAMPLE

सब सुख लहहिं तुम्हारी शरना (चौ. २२, पूर्वार्ध) ६०
सहसबदन तुम्हरो जस गावैं (चौ. १३, पूर्वार्ध) ४३
सादर हो रघुपति के दासा (चौ. ३२, उत्तरार्ध) ७३
साधु संत के तुम रखवारे (चौ. ३०, पूर्वार्ध) ७०
सुगम अनुग्रह तुम्हरे ते ते (चौ. २०, उत्तरार्ध) ५५
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा (चौ. ९, पूर्वार्ध) ३५
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई (चौ. ३५, उत्तरार्ध) ७६
हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै (चौ. ५, पूर्वार्ध) २८
है परसिद्ध जगत-उजियारा (चौ. २९, उत्तरार्ध) ६८
होत न आज्ञा बिनु पैसारे (चौ. २१, उत्तरार्ध) ५६
होय सिद्धि साखी गौरीसा (चौ. ३९, उत्तरार्ध) ८०

SAMPLE

शब्दानुक्रमणी

इस अनुक्रमणीमें *श्रीहनुमान्-चालीसा*में प्रयुक्त सभी शब्द अकारादिक्रमसे सूचित हैं। तत्तत् शब्दके अवयवी दोहा अथवा चौपाईकी *महावीरी* व्याख्याकी प्रस्तुत संस्करणमें पृष्ठ-संख्या (अथवा पृष्ठ-संख्याएँ) दाहिनी ओर दिखाई गई है (अथवा गईं हैं)। पाठकोंकी सुविधाके लिए *रघुबर-बिमल-जस* आदि दीर्घ समासोंका प्रायः विग्रह करके *रघुबर, बिमल,* और *जस* आदि घटक पदोंको स्वतन्त्र रूपसे सूचित किया गया है। जिन समासोंका संज्ञाके रूपमें व्यवहार है अथवा जिनके पश्चात् तद्धित प्रत्ययका विधान है (यथा *रघुबर, बजरंगी, पवनतनय* इत्यादि), उन समासोंको प्रायः यथावत् (समस्त रूपमें) सूचित किया गया है।

अंजनिपुत्र २१
अंत ७५
अचरज ५४
अति ३१
अतुलित २१
अनुग्रह ५५
अमित ६७
अरु २८
अष्ट ७१
अस ४३, ७१
असुर ३७, ७०
अहीशा ४४
आज्ञा ५६
आतुर ३१
आपन ६१
आपे ६१
आवै ६३
उजागर १९
उजियारा ६८
उपकार ४७
उर ४१
और ६७, ७६
कंचन २६
कंठ ४३
कटै ७७
कपीश १९
कबि ४५
कर ७९
करई ७६
करहु ७८

SAMPLE

करिबे ३१
कलेश १७
कहाँ ४५
कहाई ७५
कहि ४३, ४५
काँधे २८
काँपे ६१
काज ३१, ३७, ५५, ६६
कानन २६
काल ७५
काहू ६०
की ७८
कीजै ८१
कीन्हा ४७
कीन्ही ४२
कुंचित २६
कुंडल २६
कुबेर ४५
कुमति २३
कृपा ७८
के २३, ३७, ५५, ६६, ७०, ७१, ७३, ७४
केसरीनंदन २९
केसा २६
को ३१, ३३, ६०, ७४
कोइ ६७
कोई ७९
कोबिद ४५
क्रम ६५
गये ५४
गावैं ४३
गुण १९
गुणी ३१
गुरुदेव ७८
गोसाईं ७८
गौरीसा ८०
चरन १४
चरित्र ३३
चलीसा ८०
चातुर ३१
चारि १४
चारों ६८
चित्त ७६
चेरा ८१
छाजै २८
छुड़ावै ६५
छूटहिं ७९
जग २९, ४९
जगत ५५, ६८
जनम ७४
जनेऊ २८
जन्म ७५
जपत ६४
जब ६३
जम ४५
जय १९, ७८
जरावा ३५
जलधि ५४
जस १४, ४३
जहाँ ४५, ७५

SAMPLE

जाई ७५
जानकी ७१
जाना ४९
जानिकै १७
जानू ५१
जियाये ४१
जीवन ६७
जुग ५१, ६८
जे ५५
जो . १४, ६५, ६७, ७७, ७९, ८०
जोजन ५१
ज्ञान १९
डर ६०
डेरा ८१
तनु १७
तासु ६७
ताहि ५१
तिन ६६
तिहुँ १९
तीनौं ६१
तुम . ४२, ४७, ५६, ६०, ६६, ७०
तुम्हरे ५५, ७३, ७४
तुम्हरो ४३, ४९
तुम्हारा ६८
तुम्हारी ६०
तुलसीदास ८१
ते ४५, ५५, ६१
तें ६५
तेज २९, ६१
दाता ७१
दायक १४
दासा ७३
दिखावा ३५
दिगपाल ४५
दीन्ह ७१
दीन्हा ४७
दुआरे ५६
दुख ७४
दुर्गम ५५
दुलारे ७०
दूत २१
देवता ७६
देहु १७
धरई ७६
धरि ३५, ३७
धामा २१
ध्यान ६५
ध्वजा २८
न ५६, ७६
नव ७१
नहिं ६३
ना ६०
नाईं ७८
नाथ ८१
नाम ६३
नामा २१
नारद ४४
नासै ६४
नाहीं ५४
निकंदन ७०

SAMPLE

निकट ६३
निज १४
निधि ७१
निरंतर ६४
निवार २३
पढ़ै ८०
पद ४७
पर ५१, ६६
परताप ६८
परसिद्ध ६८
पवनकुमार १७
पवनतनय ८२
पवनसुत २१
पाठ ७९
पावै ६७, ७४
पासा ७३
पिशाच ६३
पीरा ६४, ७७
पैसारे ५६
प्रताप २९
प्रभु ३३, ५४
प्रिय ४२
फल १४, ५१, ६७
बंदन २९
बंदि ७९
बचन ६५
बजरंगी २३
बज्र २८
बड़ाई ४२
बर ७१
बरन २६
बरनउँ १४
बल १७, २१
बलबीरा ७७
बसहु ८२
बसिया ३३
बहुत ४२
बार ७९
बिकट ३५
बिकार १७
बिक्रम २३
बिद्या १७
बिद्यावान ३१
बिनु ५६
बिभीषन ४९
बिमल १४
बिराज २६
बिराजै २८
बिसरावै ७४
बीरा ६४
बुद्धि १७
बुधि १७
ब्रह्मादि ४४
भए ४९
भक्त ७५
भजन ७४
भरतहिं ४२
भाई ४२
भानू ५१
भीम ३७

SAMPLE

भूत ६३
भूप ८२
मंगल ८२
मंत्र ४९
मधुर ५१
मन १४, ३३, ६५
मनोरथ ६७
मम ४२
महँ ८१
महा २९, ७९
महाबीर २३, ६३
माता ७१
माना ४९
माहीं ५४
मिटै ७७
मिलाय ४७
मुकुर १४
मुख ५४
मुद्रिका ५४
मुनीशा ४४
मूँज २८
मूरति ८२
मेलि ५४
मोहिं १७
यह ८०
रक्षक ६०
रखवारे ५६, ७०
रघुपति ४२, ७३
रघुबर १४
रघुबर-पुर ७५
रज १४
रसायन ७३
रसिया ३३
राज ४७
राम . २१, ३१, ३३, ४७, ५६, ६६, ७०, ७३, ७४, ८२
रामचंद्र ३७
राय ६६
रूप ३५, ३७, ८२
रोग ६४
लंक ३५
लंकेश्वर ४९
लखन ३३, ४१, ८२
लगावैं ४३
लहहिं ६०
लाँघि ५४
लाय ४१
लाये ४१
लावै ६५, ६७
लील्यो ५१
लोक १९, ६१
शंकर २९
शत ७९
शरना ६०
श्रीगुरु १४
श्रीपति ४३
श्रीरघुबीर ४१
सँजीवनि ४१
सँवारे ३७
सँहारे ३७

SAMPLE

संकट ६५, ७७, ८२
संगी २३
संत ७०
सकल ६६
सकैं ४५
सदा ८१
सनकादिक ४४
सब ४९, ६०, ६४, ६६, ७७
सम ४२
सम्हारो ६१
सरोज १४
सर्ब ७६
सहसबदन ४३
सहस्र ५१
सहित ४४, ८२
साखी ८०
सागर १९
साजा ६६
सादर ७३
साधु ७०
सारद ४४
सिद्धि ७१, ८०
सियहिं ३५
सिरताजा ६६
सीता ३३, ८२
सुख ६०, ७६, ७९
सुगम ५५
सुग्रीवहिं ४७
सुधारि १४
सुनावै ६३
सुनिबे ३३
सुबेसा २६
सुमति २३
सुमिरै ७७
सुमिरौं १७
सुर ८२
सूक्ष्म ३५
सेइ ७६
स्वयं २९
हनुमत ६४, ७६, ७७
हनुमान १९, ६५, ७८, ८०
हरण ८२
हरषि ४१
हरहु १७
हरि ७५, ८१
हरै ६४
हाँक ६१
हाथ २८
हीन १७
हृदय ८१, ८२
है ६८
हो ७३
होई ७९
होत ५६
होय ८०

SAMPLE

हनुमान्‌जीकी आरती

रचयिता—हिन्दूधर्मोद्धारक जगद्गुरु आद्य रामानन्दाचार्य[१]

आरति कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट-दलन रघुनाथ-कला की॥ १ ॥
जाके बल गरजे महि काँपे।
रोग सोग जाके सिमाँ न चाँपे॥ २ ॥
अंजनी-सुत महाबल-दायक।
साधु संत पर सदा सहायक॥ ३ ॥
बाएँ भुजा सब असुर सँघारी।
दहिन भुजा सब संत उबारी॥ ४ ॥
लछिमन धरनि में मूर्छि पड़्यो।
पैठि पताल जमकातर तोड़्यो॥ ५ ॥
आनि सजीवन प्रान उबार्‌यो।
मही सबन कै भुजा उपार्‌यो॥ ६ ॥
गाढ़ परे कपि सुमिरौं तोहीं।
होहु दयाल देहु जस मोहीं॥ ७ ॥
लंका कोट समुंदर खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥ ८ ॥

---

[१] इस पदको आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. श्यामसुन्दर दास, सर जॉर्ज ग्रियर्सन, और रामकुमार वर्मा सदृश अनेक विद्वानोंने रामानन्दाचार्यजीकी रचना माना है।

SAMPLE

लंक प्रजारि असुर सब मार्‌यो।
राजा राम कै काज सँवार्‌यो॥ ९ ॥
घंटा ताल झालरी बाजै।
जगमग जोति अवधपुर छाजै॥ १० ॥
जो हनुमान की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परम पद पावै॥ ११ ॥
लंक बिधंस कियो रघुराई।
रामानन्द आरती गाई॥ १२ ॥
सुर नर मुनि सब करहिं आरती।
जै जै जै हनुमान लाल की॥ १३ ॥

प्रस्तुत पाठके स्रोत हैं—(१) डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल (संपादित) (१९५५ ई.), *रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ* (प्रथम संस्करण), काशी: नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ ७; और (२) डॉ. बदरीनारायण श्रीवास्तव (१९५७ ई.), *रामानन्द साहित्य तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव,* प्रयाग: हिन्दी परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय, पृष्ठ १३९। दोनों स्रोतोंमें कईं पाठभेद हैं, यथामति समीचीन पाठ ही यहाँ प्रस्तुत किया गया है—संपादक।

SAMPLE

SAMPLE

पद्मविभूषण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य **स्वामी रामभद्राचार्य** भारतके प्रख्यात विद्वान्, शिक्षाविद्, बहुभाषाविद्, महाकवि, भाष्यकार, दार्शनिक, रचनाकार, संगीतकार, प्रवचनकार, कथाकार, व धर्मगुरु हैं। वे चित्रकूट-स्थित **श्रीतुलसीपीठ**के संस्थापक एवं अध्यक्ष और **जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलाङ्ग विश्वविद्यालय**के संस्थापक एवं आजीवन कुलाधिपति हैं। स्वामी रामभद्राचार्य दो मासकी आयुसे प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी २२ भाषाओंके ज्ञाता, अनेक भाषाओंमें आशुकवि, और शताधिक ग्रन्थोंके रचयिता हैं। उनकी रचनाओंमें चार महाकाव्य (दो संस्कृत और दो हिन्दीमें), रामचरितमानसपर हिन्दी टीका, अष्टाध्यायीपर गद्य और पद्यमें संस्कृत वृत्तियाँ, और प्रस्थानत्रयीपर (ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता, और प्रधान उपनिषदोंपर) संस्कृत और हिन्दी भाष्य प्रमुख हैं। वे तुलसीदासपर भारतके मूर्धन्य विशेषज्ञोंमें गिने जाते हैं और रामचरितमानसके एक प्रामाणिक संस्करणके संपादक हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सनातन धर्मके सर्वाधिक लोकप्रिय स्तोत्र **श्रीहनुमान्-चालीसा**पर स्वामी रामभद्राचार्यकी ***महावीरी*** व्याख्याका तृतीय संस्करण है। ईस्वी सन् १९८३में मात्र एक दिनमें प्रणीत इस व्याख्याको रामचरितमानसके अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवादक डॉ. रामचन्द्र प्रसादने *श्रीहनुमान्-चालीसा*की 'सर्वश्रेष्ठ व्याख्या' कहा है। अनेक टिप्पणियों और परिशिष्टों सहित *महावीरी* व्याख्याका परिवर्धित अंग्रेज़ी अनुवाद भी ***Mahāvīrī:*** *Hanumān-Cālisā Demystified* नामसे प्रकाशित हो चुका है।

₹120 US $4.00

ISBN 978-81-931144-1-4

9 788193 114414

॥निरामय॥

Niraamaya Publishing

http://www.npsbooks.com